शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 11
Issue 1&2
15 July 2020

कोविड 19 का राजनीतिक प्रभावः चिंतन, चुनौती एवं संभावनाएँ

बीज शब्द :

कोविड-19, केन्द्र स्तर, केन्द्र-राज्य स्तर, अंतराष्ट्रीय स्तर, राजनीतिक प्रभाव

सन 2020 में कोविड 19 शायद विश्व का सबसे अधिक बोलने, सुनने अधिक प्रचलन में आने वाला शब्द बन गया हैं। जिसके उच्चारण मात्र से ही भय की अनुभूति होती है। यह समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या न होकर सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। इसके जन्म के समय यह एक स्वास्थ्य समस्या थी लेकिन जैसे ही अपनी सीमाऐं लांध कर यह सम्पूर्ण मानव समाज को प्रभावित करने लगी तब यह एक सामाजिक समस्या का रूप लेने लगी। इसके उन्मूलन के लिये जब बड़े स्तर पर धन की आवश्यकता महसूस होने लगी तब इसे आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाने लगा। हर वह समस्या जो संपूर्ण राष्ट को प्रभावित करती है, एक राष्ट्रीय समस्या होती है। जिसका समाधान करना किसी भी राष्ट्र का एक नैतिक कर्तव्य होता हैं। इसी नैतिक कर्तव्य के साथ कोविड 19 के राजनीतिक पक्ष का प्रारंभ होता हैं। वर्तमान समय में इस महामारी की तुलना 1918 में आयी स्पेनिज़ "लु नामक महामारी से की जा रही हैं। उस समय जो बड़ा राजनीतिक परिर्वतन हुआ था। वैसा ही राजनीतिक परिर्वतन कोविड 19 के बाद आने की संभावना हैं। निश्चय ही आने वाला इतिहास कोविड 19 को आधार मानकर राजनीतिक व्यवस्था का आंकलन करेगा तथा चिंतन के साथ कई चुनौती एवं संभावनाओं को भी जन्म देगा।

*****

डॉ. लता धुपकरियाा
सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र कृ.प.शा.
स्नातकोत्तर महाविधाालय, देवास (उ0प्र0)

कोविड 19 का राजनीतिक प्रभावः चिंतन, चुनौती एवं संभावनाएँ

सन 2020 में कोविड 19 शायद विश्व का सबसे अधिक बोलने, सुनने अधिक प्रचलन में आने वाला शब्द बन गया हैं। जिसके उच्चारण मात्र से ही भय की अनुभूति होती है। यह समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या न होकर सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। इसके जन्म के समय यह एक स्वास्थ्य समस्या थी लेकिन जैसे ही अपनी सीमाऐं लांध कर यह सम्पूर्ण मानव समाज को प्रभावित करने लगी तब यह एक सामाजिक समस्या का रूप लेने लगी। इसके उन्मूलन के लिये जब बड़े स्तर पर धन की आवश्यकता महसूस होने लगी तब इसे आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाने लगा। हर वह समस्या जो संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है एक राष्ट्रीय समस्या होती है। जिसका समाधान करना किसी भी राष्ट्र का एक नैतिक कर्तव्य होता हैं। इसी नेतिक कर्तव्य के साथ कोविड 19 के राजनीतिक पक्ष का प्रारंभ होता हैं। वर्तमान समय में इस महामारी की तुलना 1918 में आयी स्पेनिज़ "लु नामक महामारी से की जा रही हैं। उस समय जो बड़ा राजनीतिक परिर्वतन हुआ था। वैसा ही राजनीतिक परिर्वतन कोविड 19 के बाद आने की संभावना हैं। निश्चय ही आने वाला इतिहास कोविड 19 को आधार मानकर राजनीतिक व्यवस्था का आंकलन करेगा तथा चिंतन के साथ कई चुनौती एवं संभावनाओं को भी जन्म देगा।

उद्देश्यः- *शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान समय में प्रचलित कोरोना महामारी के राजनीतिक प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करना हैं। तथा उन चुनौती एवं संभावनाओ को खोजना है जो राजनीतिक परिदृश्य को परिवर्तित करेगी।*

शोध.प्रविधिः- *उक्त शोध पत्र में वर्णनात्मक, गणनात्मक शोध पति का उपयोग किया गया हैं एवं तथ्य संकलन हेतु द्वितीयक स्त्रोत को माध्यम बनाया गया हैं। जिसके अंर्तगत समाचार पत्र पत्रिकाओ का सहारा लिया गया हैं। कोविड 19 के राजनीतिक प्रभाव का आंकलन करने के लिये चिंतन के स्तरो का निम्नलिखित विभाजन किया गया है।*

केन्द्र स्तरः- *भारत में संसदात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया हैं। यहां देश का वास्तविक मुखिया प्रधानमंत्री होता हैं। इसमें कोई सजिश नहीं हैं कि वर्ष 2020 एवं 2021 का समय भारतीय प्रधानमंत्री के लिये हर मोर्चे पर चुनौतियों का काल रहा हैं। जिसमें* जिसमें सबसे बड़ी चुनौती कोविड-19 हैं। निश्चय ही इस महामारी से निपटने में केन्द्र सरकार द्वारा हर स्तर पर सराहनीय प्रयास कियें गये हैं। चाहें वह 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज की घोषणा हो या भारत को आत्म निर्भर बनाने का अभियान। लेकिन कोविड 19 की दिशा में केन्द्र सरकार द्वारा किये गये इन कार्यो को सत्ता पक्ष दल उसे दलीय रुप देने का प्रयास कर रहा हैं अर्थात आगामी लोकसभा चुनाव में सत्ता पक्षी दल इन कार्यो को आधार बना कर मतदाता से वोट मांगने का प्रयास करेगा इसे अपने दल की उपलब्धि के रुप में प्रचारित व प्रसारित करेगा। कहने का तात्पर्य यह हैं कि कोरोना महामारी एक मार्मिक विषय हैं लेकिन इसे भी राजनीतिक रंग में रंगने का प्रयास राजनीतिक दलों द्वारा किया जा रहा हैं। चाहे वह प्रवासी मजदूरों का मुद्दा हो, मुक्त अनाज वितरण या कोरोना सें संम्बन्धित कोई सहायता। हर विषय को राजनीतिक बहस का मुददा बनाया गया हैं। वही दूसरी तरफ विपक्षी दल इस प्रयास में लगा हुआ हैं कि केन्द्र सरकार कोविड 19 से लड़ने में कहा कमजोर साबित हो रही हैं। उस कमजोरी को विपक्ष अपने अनुसार भुनाने का प्रयास करेगा।

केन्द्र-राज्य स्तर परः- भारतीय संविधान में केन्द्र सूची, राज्य सूची, समवर्ती सूची के माध्यम से केन्द्र एवं राज्य के मध्य शक्तियों का बंटवारा किया गया हैं। कोविड 19 की बात की जाए तो केन्द्र पर यह आरोप लगते रहे है कि इस महामारी से लड़ने में केन्द्र सरकार विपरीत दल वाले राज्यों की उनकी आवश्यकता के अनुसार मदद नहीं कर पा रही हैं यदि किसी भी रुप में केन्द्र सरकार इन राज्यों की सहायता करती भी हैं तो उसे केन्द्र की उपलब्धि एवं संबधित राज्य की किलता के रुप में प्रचारित किया जा रहा हैं। अप्रत्यक्ष रुप से यह मानस तैयार किया जा रहा हैं कि सत्तापक्षीय दल एवं उस दल से संम्बन्धित राज्य कोविड 19 से लड़ने में अधिक सफल हुए हैं जबकि अन्य दल उतने कामयाब नहीं हुऐ हैं। इसके अतिरिक्त विपरीत दल वाले राज्यों में कोरोना संक्रमितों की संख्या अधिक देखी जा रही हैं इसे भी राजनीतिक रंग देने का प्रयास इस दौरान किया गया हैं। चूंकि भारतीय संघवाद में केन्द्र-राज्य के मतभेद, आरोप-प्रत्यारोप एक राजनीतिक संस्कृति के रुप में देख सकते हैं बावजूद इसके केविड 19 के दौरान भारतीय संघ ने सहयोगात्मक संघवाद का परिचय दिया हैं। यही कारण हैं कि जब देश के प्रधानमंत्री के द्वारा जनता करर्यू लगाने, एक साथ दीप प्रज्वलन व शंखनाद करने की अपील की जाती है तो संपूर्ण राष्ट्र की सभी इकाईया अखंडता के धांगे में बंधी मोतियों की माला के रुप में एकजूट नजर आती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तरः-कोविड19 का सबसे अधिक राजनीतिक प्रभाव अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता हैं। तथा कथित यह आरोप लगते रहे हैं। कि कोविड19 का जन्म एक साजिश के तहत चीन की बुहान लैब में हुआ हैं, जिसने अमेरिका, इटली, स्पेन सहित

कई विकसित राष्ट्रों को अपनी शिकांजे में लिया हैं। इस महामारी ने शक्ति की राजनीति की अवधारणा को आहत किया हैं तथा महाशक्ति अमेरिका के गुरुर को तोड़ा है इसे चीनी सांजिश मानते हुए अमेरिका ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को अर्थिक सहायता बंद करने व इस संगठन से अलग होने का निर्णय लिया। अमेरिका का यह निर्णय विश्व राजनीति में शक्ति संतुलन के एक नये समीकरण का संकेत दे रहा हैं। जिसमें अमेरिका-चीन एक दूसरे के विरोधी नजर आ रहें है वहीं दूसरी ओर भारत-अमेरिका मित्रता की एक नई परिभाषा लिख रहे है। इस बढ़ती मित्रता से चीन की बोखलाहट को गवलन घाटी में घुसपैठ के रुप में देख सकते हैं। निश्चित ही इस महामारी में भारत एक सशक्त राष्ट्र बनकर उभरा है जिसने अमेरिका को भारत से औषिधिय सहायता लेने के लिये विवश किया तथा चीन के 59 एप्स को बंद करने जैसा महत्वपूर्ण निर्णय लिया। कोविड 19 के दौर में संपूर्ण विश्व की राजनीति भारत-अमेरिका-चीन त्रिकोण के इर्द गिर्द घुमती नजर आ रही हैं।

चुनौतीः- कोरोना महामारी के कारण बदले सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिदृश्य ने भारत के समक्ष कई चुनौतियो को जन्म दिया हैं जो इस प्रकार हैंः-

1. कोरोना के कारण भारत के समक्ष उपजी सबसे बड़ी चुनौती बेरोजगारी हैं लॉकडाउन के कारण बदली जीवनशैली ने बेरोजगारी को बढ़ाया हैं। जिसने निपटना एक बड़ी चुनौती हैं।
2. दूसरी बड़ी चुनौती अप्रत्यक्ष रुप से व्याप्त आर्थिक मंदी से निपटना हैं।
3. इस महामारी को देखते हुए बड़े स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओ का विस्तार करना हैं।
4. अन्य देशों के साथ वस्तुओं के आयात निर्यात में सावधानी रखना।
5. लॉकडाउन के पश्चात हर स्तर पर जीवन स्तर को पहले की तरह सामान्य बनाना।
6. कोरोना की विध्वंसकारी दूसरी लहर से निपटना।
7. भारत जैसै विशाल देश में कोरोना से बचाव के लिये टीकाकरण अभियान को सफल बनाना। निश्चित ही उक्त समस्याए किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिये गंभीर चुनौतियां हैं।

संभावनाएंः- हर संकट एक नये परिवर्तन की दस्तक भी लेकर आता हैं ठीक वैसे ही कोविड 19 के संकट ने हमारे समक्ष कई संभावना को जन्म दिया हैं।

1. वर्तमान समय में चीन के प्रति अंर्तराष्ट्रीय जगत की नाराजगी को भारत अपने पक्ष में भुनाते हुए सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिये एक माहौल तैयार कर सकता हैं।
2. जिन भारतीय प्रतिभाओ के कारण अन्य राष्ट्र विकसित बने है। किंतु कोविड-19 के कारण जब ऐसी प्रतिभाए अपने देश में लौट रही हैं। तब एसे समय में भारत के लिये ये स्वर्णिम अवसर है कि वह इन प्रतिभाओ को भारत में रुकने के लिये अवसर और आकर्षण को निर्मित करें।
3. कोविड 19 के कारण निश्चित ही राजनीतिक संस्कृति में भी परिवर्तन संभव है। अर्थात अब चुनावी रैली, चुनाव प्रचार-प्रसार, चुनाव के तरीके, विधायिका में बैठक व्यवस्था, संसद के सत्र आदि में डिजिटल संस्कृति का चलन बढ़ेगा तथा सामाजिक दूरी, मास्क, सेनेटाइजर जैसे शब्द एक आदत बन जाएगें।
4. अब चुनावी मुदद्ों मे भी बदलाव संभव है स्वास्थ्य मुख्य चुनावी मुदद् बन सकता है। मतदाताओं के मतदान व्यवहार में भी परिवर्तन संभव है हो सकता है मतदाता ऐसे दल को मत देने के लिये प्रेरित हो जो अधिक स्वास्थ्य सेवाऐ उपलब्ध कराए। कोविड 19 के प्रकोप के कारण हो सकता है अब बजट निर्माण में भी स्वास्थ सं बंधी पक्ष कुछ एहमियत मिलें।

निष्कर्षः- कोविड 19 निश्चित ही एक ऐसी विस्मयकारी घटना हैं। जिसे सम्पूर्ण मानव जाति कभी भूल नही सकती लेकिन मनुष्य का यह स्वभाव है। कि वह हर चुनौती के बीच एक नया रास्ता खोज ही लेता है। ये भारत के कुशल नेतृत्व, दूरदृष्टि एवं सुनियोजित नीति का ही परिणाम है, कि भारत स्वयं को इस संकट से बाहर निकालने के लियें कई चुनौतियों के साथ आगे बढ़ रहा है। जिसका उदाहरण कोरोंना वेक्सीन का निर्माण एवं टीकाकरण अभियान हैं। लेकिन यह सफलता निश्चितंता कि नहीं वरन स्वास्थ्य के प्रति सावधानी एवं सतर्कता की अपेक्षा रखती है।

संदर्भः-

1. 1 नई दुनिया, जून 2020
2. 2 दैनिक भास्कर , जुलाई 2020
3 इंडिया टुडे 2020

◆◆◆